International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 01-07-2020; Accepted: 15-07-2020; Published: 02-08-2020
www.alleducationjournal.com
Volume 5; Issue 4; 2020; Page No. 36-38

महात्मा गाँधी जी के शैक्षिक चिंतन का अध्ययन तथा वर्तमान भारतीय समाज में उसकी सार्थकता

सुनीता रानी [1], समी उर्रहमान खान सूरी [2]
[1] शोधकर्ती (शिक्षाशास्त्र), श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोध निदेशक, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

शिक्षा ही बालक की संवेदनशीलता और दृष्टि को प्रखर करती है। शिक्षा से ही समझ और चिन्तन में स्वतंत्राता आती है। शिक्षा ही आत्मनिर्भरता की आधरशिला है। विकास की प्रत्येक श्रेणी के लिए शिक्षा आवश्यक है। पिफर वो विकास चाहे व्यक्तिगत हो अथवा राष्ट्रीय। शिक्षा के द्वारा बालक की नैसर्गित, अविकसित एवं सुप्त क्षमताओं और गुणों के विकास के लिए इस प्रकार के उचित परिवेश की आवश्यकता है जिससे कि वह अपने शिक्षकों से प्रेरित हो सके तथा अनुभव प्राप्त कर समाज का एक सुयोग्य नागकिर बन सके।

शिक्षा का शैक्षिक, सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में इतना अधिक महत्व है कि उसके गुण और उपलब्धियों को शब्दों में बाँधना अत्यन्त दुष्कर है। शिक्षा के द्वारा ही बालक का सर्वांगीण विकास संभव है। शिक्षा के द्वारा ही एक साधरण मानव और फिर महामानव तक हो सकता है।

शिक्षा का धर्म, राजनीति और समाज से बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। क्योंकि समाज और संस्कृति दोनों ही परिवर्तनशील है, इसलिये शिक्षा भी निरन्तर नवीन विचारधाराओं से प्रभावित होती रहती है। शिक्षा के स्वरूप के साथ ही उसके अर्थ व उद्देश्य भी परिवर्तित होते रहते हैं। अतः विभिन्न विभूतियों जैसे– राजाराम मोहनराय, दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, बालगंगाधर तिलक, मोतीलाल नेहरू, पं० मदन मोहनमालवीय, गाँधी जी व श्री सम्पूर्णानन्द ने शिक्षा के विषय में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में अपने महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये हैं।

गाँधी जी के शैक्षिक विचार जीवनगत अनुभवों, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मान्यताओं पर आधारित थे। उनका कहना था कि शिक्षा के मूल्यों को अनुभव में ही खोजना चाहिए। गांधी जी ने अपने विचारों को जनता के समक्ष प्रस्तुत किया। गांधी जी वर्तमान शिक्षा पद्धति से सहमत नहीं थे। उनका मानना था कि शिक्षा के माध्यम से प्राणी मात्र का सर्वागीण विकास हो किन्तु प्रचलित शिक्षा प्रणाली द्वारा यह सम्भव नहीं था। इसी समस्या के समाधान हेतु उन्होंने अपनी प्रतिक्रिया से राष्ट्र को अवगत कराया।

विश्व के अनेक विलक्षण प्रतिभा के धनी शिक्षाविदों ने शिक्षा को अपने–अपने दृष्टिकोण से प्रतिपादित किया। किन्तु भारत मे गांधी जी पहले ऐसे शिक्षाशास्त्री थे, जिन्होंने सर्वागींण शिक्षा की रूपरेखा तैयार की। यदि हम विश्व के महान शिक्षाशास्त्रियों से गांधी जी के शैक्षिक विचारों की तुलना करना चाहें तो शायद यह बहुत ही जटिल कार्य होगा।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य शोध की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित–अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से शोधकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

राय, एम0 (1986) ने अपने शोधग्रंथ "पंडित मदनमोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों का अध्ययन" में उनके शिक्षा के उद्देश्यों, महत्व और प्रकृति का अध्ययन किया और पाया कि पंडित जी के अनुसार विद्यार्थी का जीवन सादा होना चाहिए, विनम्रता विद्यार्थी के लिए आभूषण की तरह है तथा विद्यार्थियों में स्वअनुशासन की भावना विकसित की जानी चाहिये।

आनन्ता शर्मा (2000) ने महात्मा गांधी एवं रवीन्द्र नाथ टैगोर की शैक्षिक विचारधारा का तुलनात्मक अध्ययन किया। उन्होंने अपने अध्ययन में दोनो महान विभूतियों के अनुसार शिक्षा के विभिन्न अंगो यथा – शिक्षा का अर्थ, उद्देश्य, शिक्षण विधि, शिक्षक, विद्यालय तथा शिक्षा के अन्य पक्ष यथा स्त्री शिक्षा तथा व्यवसायिक शिक्षा पर उनके विचारो का वर्णन किया तथा उनका तुलनात्मक विश्लेषण किया जिसमें उन्होंने दोनो के शैक्षिक विचारो में कुछ समानतायें तथा कुछ असमानतायें पायी।

शर्मा, श्रीमती वीना (2009) ने अपने शोधग्रंथ "पं॰ मदनमोहन मालवीय एवं महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" में मालवीय जी तथा गाँधीजी के शिक्षा दर्शनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया तथा शिक्षा के उद्देश्यों, महत्व और प्रकृति के बारे में विचार व्यक्त किये।

अध्ययन में सम्मिलित व्यक्तित्व

महात्मा गाँधी जी

विश्व के इतिहास में बहुत कम ऐसे व्यक्तित्व हुए जिन्होंने मानवता पर अपनी एक अलग छाप छोड़ी है, इनमें से कुछ ने शांति संदेश, आदर, सम्मान व सहिष्णुता का समर्थन किया, तो कुछ ने इन मूल्यों को अपने सामाजिक कार्यों में दर्शाया तथा कुछ ने मानव अधिकारों और मानवीय गरिमा के लिए कार्य किया, वहीं कुछ ने राष्ट्रीय सम्प्रभुता को अपने कार्य का आधार बनाया। परन्तु विश्व के इतिहास में बहुत कम ऐसे लोग हैं जिन्होंने इन मूल्यों व विचारों को एक साथ पिरोकर अपने दर्शन व व्यक्तित्व में उतारने का कार्य किया और उनको एक समन्वित व एकीकृत दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत किया। ऐसा महान् व्यक्तित्व महात्मा गाँधी ही हो सकते हैं, जहाँ गाँधी और नैतिकता समानार्थक (संज्ञा व विशेषण के रूप में) हो जाते हैं।

अध्ययन का महत्व

महात्मा गांधी जी का शैक्षिक चिंतन वर्तमान समय में शिक्षा जगत में एक नई प्रकार की किरणें बिखेर सकता है क्योंकि वर्तमान शिक्षा जगत को जिन लक्ष्यों और आदर्शों की अधिक आवश्यकता है जो महात्मा गांधी जी के शैक्षिक चिंतन में निहित हैं। इसी कारण से शोधकर्ती ने महात्मा गांधी जी के शैक्षिक चिंतन का अध्ययन तथा वर्तमान भारतीय समाज में उसकी सार्थकता नामक विषय शोध हेतु चुना है। अतः शोधकर्ती ने अपने शोध के माध्यम

से महात्मा गांधी जी के शैक्षिक चिंतन को जानने की कोशिश की ताकि उनके शैक्षिक चिंतन का अध्ययन करके वर्तमान भारतीय समाज में उसकी महत्व को अपनाया जा सके।

भारत में वर्तमान समय में जो शिक्षा पद्धति प्रचलित है। वह विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास में सहायक बनने के बजाय बाधक बन गई है। शैक्षिक मूल्य नष्ट हो गये हैं। इस प्रकार की परिस्थितियों में ऐसी शिक्षण प्रणाली की व्यवस्था की जानी उचित होगी, जो सम्पूर्ण समाज को ज्ञान प्रदान करे, नैतिक मूल्यों को पुनः स्थापित कर पायें। इन महत्वपूर्ण उद्देश्यों को पूरा करने में महात्मा गांधी जी के शैक्षिक चिंतन अवश्य ही सार्थक सिद्ध होगा।

अध्ययन का उद्देश्य

महात्मा गांधी जी के शैक्षिक चिंतन (शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि तथा गुरु–शिष्य सम्बन्ध) का अध्ययन करना।

समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध में महात्मा गांधी जी के शैक्षिक चिंतन सम्बन्धी विचारों की वर्तमान भारतीय समाज में सार्थकता को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया। यह शोध अध्ययन महात्मा गांधी जी द्वारा प्रस्तुत शैक्षिक चिंतन–शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि तथा गुरु–शिष्य सम्बन्ध में दिये गये विचारों तक ही सीमित है।

शोध विधि एवं प्रक्रिया

प्रस्तुत अध्ययन मूल रूप से महात्मा गांधी जी के ग्रन्थों, लेखों तथा अन्य स्रोतों के आधार पर उनके शैक्षिक चिंतन को सुव्यवस्थित करने और उनके शैक्षिक चिंतन के आधार पर शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि तथा गुरु–शिष्य सम्बन्ध को प्रस्तुत करने हेतु नियोजित किया गया। प्रस्तुत शोध में ऐतिहासिक विधि को अपनाया गया। प्रस्तुत अध्ययन में महात्मा गांधी जी द्वारा लिखित विभिन्न पुस्तकों, लेखों, पत्रों तथा अन्य अध्ययन सामग्री का अध्ययन किया गया।

तथ्यों का संकलन

तथ्यों के संकलन के लिए महात्मा गांधी जी द्वारा लिखित साहित्य तथा अन्य लेखकों के द्वारा महात्मा गांधी जी के शैक्षिक चिंतन पर लिखे साहित्य का अध्ययन किया गया।

महात्मा गाँधी जी का षैक्षिक चिंतन तथा वर्तमान भारतीय समाज में उसकी सार्थकता

गाँधी जी के शिक्षा दर्शन का इनके जीवन दर्शन से घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। गाँधी जी का मत है कि सत्य, अहिंसा, सेवा, निर्भयता आदि जीवन के ऐसे उद्देश्य है, जिनकी प्राप्ति केवल शिक्षा के द्वारा ही हो सकती हैं। इन्होंने कहा कि आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति का एकमात्र आधार शिक्षा है। गाँधी जी का शिक्षा दर्शन इनके जीवन दर्शन का गतिशील पक्ष है।

महात्मा गांधी का कहना है कि हमारे जीवन का इस भौतिक लोक तथा परलोक दोनों से सम्बन्ध है। अतः उन्होंने शिक्षा के उद्देश्य को भौतिकवाद एवं आध्यात्मवाद दोनों से स्थापित किया है। शिक्षा का उद्देश्य इन दोनों जीवनादर्शनों की उपलब्धि एवं पूर्ति होनी चाहिए। इस दृष्टिकोण से उन्होंने शिक्षा के उद्देश्यों को दो भागों में विभाजित किया है जो निम्न है–

शिक्षा के उद्देष्य

1. सर्वोच्च उद्देश्य
2. तात्कालिक उद्देश्य

1. सर्वोच्च उद्देश्य

गांधी जी के अनुसार शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य है– अन्तिम वास्तविकता का अनुभव ईश्वर और आत्मानुभूति का ज्ञान। आत्मानुभूति के महत्व को बताते हुए भागलपुर (बिहार) के सत्रहवें बिहारी छात्र–सम्मेलन में सभापति पद से दिए गये भाषण में उन्होंने कहा था– ''अधिकतर विद्यार्थी निरूत्साही दिखाई देते हैं। बहुत से विद्यार्थियों ने मुझसे सवाल किया है कि मुझे क्या करना चहिए? मैं देश सेवा किस तरह कर सकता हूँ? आजीविका के लिए मुझे क्या करना चाहिए? मुझे मालूम हुआ है कि आजीविका के लिए विद्यार्थियों को बड़ी चिन्ता रहा करती है। इन प्रश्नों का उत्तर सोचने से पहले यह विचार करना आवश्यक है कि शिक्षा का उद्देश्य क्या है? हक्सले ने कहा है कि शिक्षा का उद्देश्य चरित्र–निर्माण है। भारत के ऋषि मुनियों ने कहा है कि वेद आदि सारे शास्त्र जानने पर भी यदि कोई आत्मा को न पहचान सके तो उसका ज्ञान बेकार है। दूसरा वचन यह है कि जिसने आत्मा को जान लिया, उसने सब कुछ जान लिया। अक्षर ज्ञान के बिना भी आत्मज्ञान होना आवश्यक है।

2. तात्कालिक उद्देश्य

(क) पूर्ण व्यक्तित्व के विकास का उद्देश्य

गांधी जी के अनुसार बालक व मनुष्य का पूर्ण विकास शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। शिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक तथा मनुष्य के शरीर, आत्मा तथा भावनाओं को सर्वोच्च एवं सर्वागीण विकास प्राप्त किया जा सकता है।

(ख) जीविकोपार्जन का उद्देश्य

गांधी जी ने शिक्षा के अनेक उद्देश्य में जीविकोपार्जन के उद्देश्य को प्रमुख स्थान दिया है। इनके अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक को स्वतन्त्र रूप से अपनी जीविकोपार्जन के योग्य बना सके।

(ग) मुक्ति का उद्देश्य

गांधी जी का आदर्श था 'सा विद्या या विमुक्तये'। इस आदर्श के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को मोह–माया से विरक्त करना है और आत्मा को श्रेष्ठ जीवन की ओर मोड़ना है।

(घ) सांस्कृतिक विकास का उद्देश्य

गांधी जी जीविकोपार्जन उद्देश्य के साथ–साथ सांस्कृतिक विकास को भी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य मानते थे। गांधी जी मानते थे की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो मनुष्य में सामाजिक, सांस्कृतिक तथा कलात्मक अनुभवों से साक्षात्कार करा सके।

(ड) चारित्रिक विकास का उद्देश्य

गांधी जी ने बालकों के चारित्रिक तथा नैतिक विकास पर विशेष बल दिया है तथा चारित्रिक विकास के लिए शिक्षा को प्रमुख साधन मानते थे।

पाठ्यक्रम

गांधी जी की शिक्षा का लक्ष्य बालकों को समाज के लिए उपयोगी व आत्मनिर्भर बनाना था तथा वह शिक्षा को बालक का सर्वागीण विकास करने वाला माध्यम मानते थे। इसलिए गांधी जी का पाठ्यक्रम पूर्णतः क्रिया–प्रधान था। वह पाठ्यक्रम को तभी उपयोगी मानते थे जब उसके द्वारा मानव जीवन के विभिन्न पक्षों, शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, भावात्मक, सामाजिक, नैतिक व चारित्रिक विकास हो।

शिक्षण–विधियाँ

गांधी जी ने शिक्षण–विधियों पर विशेष ध्यान दिया और बताया कि जिस प्रकार शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए एक सुनियोजित पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है उसी तरह से इस

पाठ्यक्रम को समझाने के लिए शिक्षण– विधियों की आवश्यकता होती है। शिक्षा के लिए समाज में अनेक प्रकार की शिक्षण विधियां प्रचलन में थी। उन्हीं को सुधारात्मक रूप में गांधी जी ने प्रस्तुत किया। गांधी जी प्रचलित शिक्षण–विधियों को गलत मानते थे और शिक्षण विधियों को शिक्षक और विद्यार्थी के मध्य खाई के समान समझते थे। गांधी जी ने करके/क्रिया द्वारा सीखना, अनुभव द्वारा सीखना, शारीरिक अंगों के प्रयोग द्वारा सीखना तथा समन्वय शिक्षण विधियों का निर्माण किया।

गुरू–शिष्य सम्बन्ध

गांधी जी अपनी शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक–विद्यार्थी के संबधों की महत्ता को स्पष्ट करते हैं। गुरू को पूज्यनीय देवता के समान मानते थे। गांधी जी ने शिक्षक को पथ–प्रदर्शक के रूप में गौरव प्रदान किया और अपनी शिक्षा में शिक्षक का आदर्श रूप प्रस्तुत किया इसलिए शिक्षक को अपने आचरण को आदर्श बनाने का सदा प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि छात्र शिक्षक के आचरण व व्यवहार से शिक्षा पाते हैं।

गांधी जी के अनुसार छात्र पुस्तकों की अपेक्षा शिक्षक से अधिक सीखते हैं क्योंकि छात्र एवं अध्यापकों के संबंध को अभौतिक तथा आत्मिक सम्बन्ध मानते थे। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में गुरू एवं शिष्यों के सम्बन्धों को उद्देश्य प्राप्ति का साधन माना था।

गांधी जी की शिक्षा योजना में शिक्षक एवं विद्यार्थी सम्बन्धों में शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों को नम्र व आदर्श व्यवहार रहता है। विद्यार्थी शिक्षक के प्रति गुरूभाव रखता है तथा शिक्षार्थी विनय, श्रद्धा और सेवा भाव से व्यवहार करता है। गांधी जी ने कबीर के समान ही गुरू को स्थान प्रदान किया है।

महात्मा गाँधी जी के अनुसार शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य भारत को बौद्धिक महाशक्ति के रूप में विकसित करना और ज्ञान की सुरक्षा करना होना चाहिए। छात्रों में योग्य नेतृत्व के गुणों का विकास व उद्यमी नेतृत्व के विकास की भी प्रबल आवश्यकता पर बल दिया है।

पाठ्यक्रम सैद्धान्ति ज्ञान के साथ–साथ उद्यम सम्बन्धी ज्ञान और कुशलता के विकास में पूर्ण रूप से समर्थ हो तभी शिक्षा वर्तमान युग में उपयोगी हो सकेगी। पाठ्यक्रम छात्रों में सृजनात्मकता और अभिनव परिवर्तन की प्रवृत्ति को सुदृढ़ करने में सक्षम तथा धर्म निरपेक्षता व समानता मूलक सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए।

महात्मा गाँधी के अनुसार छात्रों की रूचि के अनुसार शिक्षण विधि का चुनाव किया जाना चाहिए। वे प्रयोगशाला, करके सीखने, योजना विधि जैसी शिक्षण विधियों के पक्षधर हैं।

शिक्षकों को देश का सबसे उत्तम बौद्धिक वर्ग होना चाहिए। कलाम के विचार में शिक्षकों को छात्रों के लिए आदर्श की भूमिका निभाते हुए उन्हें अनुसरण के लिए आकर्षित करने व उन्हे अच्छे गुण प्रदान करने में समर्थ होना चाहिए। उन्होंने शिक्षकों के लिए टी0 तोताद्री, आयंगर, श्रीनिवास रामानुजम तथा प्रो0 एस0 चन्द्रशेखर जैसे महान व्यक्तियों के उदाहरण प्रस्तुत किये हैं।

छात्रों के पास उच्च लक्ष्य होना चाहिए। प्रत्येक छात्र के पास एक आदर्श होना आवश्यक है। उनके अनुसार प्रत्येक छात्र को यह विश्वास रखना चाहिए कि वह जीवन की सभी अच्छी चीजों को पाने का हक रखते हैं जो ईश्वर द्वारा दी गयी हैं।

अतः गांधी जी का शैक्षिक चिंतन, वर्तमान भारतीय समाज में आज भी सार्थक है।

निष्कर्ष

1. गाँधी जी ने शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य मानव जीवन का सर्वांगीण विकास करना माना है।
2. गाँधी जी के शिक्षा के उद्देश्य राष्ट्र एवं समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल हैं।
3. गाँधी जी का शिक्षा दर्शन आध्यात्मवादी होकर भी प्रयोगवादी है।
4. गांधी जी की शिक्षा में क्रिया द्वारा सीखने और स्वयं के अनुभवों के सिद्धांतों पर बल देकर व्यावहारिक शिक्षण पर बल दिया गया है।
5. गाँधी जी की समवाय पद्धति सभी दृष्टियों से परिपक्व है।
6. गाँधी जी ने शिक्षा के माध्यम से देशभक्ति, राष्ट्रीय–प्रेम व विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास माना है।
7. गाँधी जी की शिक्षा में व्यक्तिगत तथा सामाजिक विकास पर बल देकर दोनों में संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षा व्यवसाय के लिए डॉ0 कलाम द्वारा बताये गये बौद्धित महाशक्ति के रूप में विकसित करने, ज्ञान की सुरक्षा करने, छात्रों में नैतिक नेतृत्व का विकास करने, रचनात्मकता व सृजनात्मकता का विकास जैसे उद्देश्य नव संजीवनी प्रदान करेंगे। भारत जैसे लोकतांन्त्रिक देश के लिए नागरिक सशक्तता को सुदढ़ करने में सक्षम तथा धर्म निरपेक्षता व समानतामूलक सिद्धान्तों पर आधरित पाठ्यक्रम उपादेय सिद्ध होगा। विद्यालय व सभी शिक्षण संस्थाओं को राष्ट्र की प्रयोगशालायें बनाकर समाज व राष्ट्र के निहितार्थ योग्य नागरिकों व कर्णधारों का निर्माण किया जा सकता है।

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव

महात्मा गांधी जी के शैक्षिक चिंतन सम्बन्धी विचारों का अध्ययन के समान अन्य शिक्षाशास्त्रियों के शैक्षिक चिंतन सम्बन्धी विचारों का अध्ययन किया जा सकता हैं।

महात्मा गांधी जी के शैक्षिक चिंतन सम्बन्धी विचारों का अन्य शिक्षाशास्त्रियों के शैक्षिक चिंतन सम्बन्धी विचारों से तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता हैं।

सन्दर्भ सूची

1. लाल, मुकुट बिहारी (1978)– महामना मदनमोहन मालवीय जीवन और नेतृत्व, तारा प्रकाशन वाराणसी।
2. राय पारस नाथ– अनुसंधान परिचय लक्ष्मी नारायन अग्रवाल, आगरा।
3. एम0बी0 बुच (1991)– फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, 1983–88, वाल्यूम–1 (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली)
4. शर्मा, वीना (2009)– पं0 मदनमोहन मालवीय एवं महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन : एक विश्लेशणात्मक अध्ययन"।
5. सिंह, नवनीत कुमार (2009)– "भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समाजवादी चिन्तकों का शिक्षा में योगदान और उसकी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता।
6. जे0 डी0 पुथियाय (1978)– ''स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन'' पी0 एचडी0, फिलासोफी, बोम्बे वि0वि0, उद्धत थर्ड सर्वे आफ रिसर्च एण्ड एजुकेशन पृष्ठ 46.
7. वी0 एस0 नायर (1980)– ''स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार'' पी0 एचडी0, शिक्षा, केरला यू0 1980, उद्धृत थर्ड सर्वे आफ रिसर्च एण्ड एजुकेशन, पृष्ठ 45.